REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 7 | APRIL - 2024

'सलाम आख़िरी' में स्त्री – विमर्श

जीनामणि बड़ो
प्रस्तुतकर्ता, शोधार्थी, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग.

सारांश :

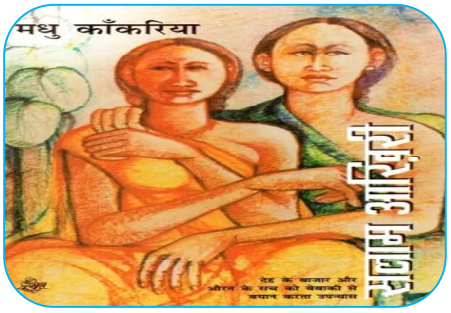

'सलाम आख़िरी' (2002) इक्कीसवीं सदी का एक यथार्थपरक उपन्यास है। कथाकार मधु काँकरिया (23 मार्च , सन् 1957) ने इस उपन्यास के माध्यम से प्रत्येक्षदर्शी वेश्या जीवन के उन्मूलन पर सभ्य समाज का ध्यान आकृष्ट करने के लिए कोशिश की है। मधु काँकरिया का जन्म एशिया के सर्वबृहत वेश्याघट्टी इलाका पश्चिम बंगाल के राजधानी कोलकाता में हुआ है। निसंदेह साहित्य का बुनियाद आसपास के वातावरण से ही तय होता है। अप्रिय सत्य को समाज के समक्ष लाने के लिए साहित्य का सहारा लिया जाता है। भारतवर्ष संस्कृति और संस्कार की दृष्टि से एक प्रमुख धनी देशों में गिनाये जाते हैं। वर्तमान सभ्य समाज के लिए वेश्या शब्द ही कर्णकटु है और वेश्या को घृणा की नजर से देखा जाता है, फिर भी वेश्यालय और वेश्याओं की संख्या कम नहीं हुआ है। इस समस्या को उखाड़ा नहीं गया है , बल्कि दैन्यता के कारण दिन व दिन भयंकर रूप धारण कर रहे हैं। यही सब बातें स्त्री– विमर्श खड़ा कर देते हैं कि एक स्त्री वेश्या की उपाधि प्राप्त करती है परंतु पुरूष इन सब से परे है उनके शरीर को कोई दाग नहीं छू सकता। वेश्या का सृष्टि भी तोपुरूषों के द्वारा ही हुआ था , इसीलिए समस्या का समाधान भी पुरूष प्रधान समाज के हाथों ही आशा की जा सकती है।

बीज शब्द : स्त्री , विमर्श, वेश्या, गणिका , सामाजिक समस्या।

प्रस्तावना :

उपन्यास आधुनिक युग की एक लोकप्रिय और बहुचर्चित साहित्यिक गद्य विधा है, जो हमारे सम्मुख रखा गया एक जिन्दादिली कथा या मनुष्य का जीवन है या तो कह सकते हैं समाज के हर एक पहलुओं की छवि। स्त्रीविमर्श एक वैश्विक विचार धारा है , हिन्दी साहित्य में इसका आरंभ आधुनिक युग से माना जाता है । स्वतंत्रता के बाद कई महिला उपन्यासकारों नेनारी जीवन की समस्याओं को अभिव्यक्त किया है । मधु काँकरिया ने भी अपने उपन्यास और कहानियों के माध्यम से नारी जीवन की दर्दनायक पहलुओंको वाणी दी है। उन्होंने अब तक खुले गगन के लाल सितारे, सूखते चिनार, सलाम आख़िरी, पत्ताखोर, सेज पर संस्कृत, हम यहाँ थे, इन छ: उपन्यासों की रचना की हैं। 'सलाम आख़िरी' वेश्या जीवन को केंद्र में लेकर लिखा गया एक स्त्री अस्मितामूलक उपन्यास है– "यह उपन्यास वेश्याओं और वेश्यावृत्ति के पूरे परिदृश्य को देखते हुए हमारे भीतर उन असहाय स्त्रियों के प्रति करूणा का उद्रेक करने की कोशिशकरता है, जो किसी भी कारण इस बदनाम और नारकीय व्यवसाय में फँसी हैं । कलकत्ता के सोनागाछी रेड लाइट एरिया की अँधेरी गलियों कासीधा साक्षात्कार कराते हुए लेखिका ने सभ्य समाज की संवेदनहीनता और कठोरता को भी साथसाथ झिंझोड़ती चलती है, और यही चीज इस उपन्यास को सिर्फ एक कथा-पुस्तक की हद से निकालकर एक जरूरी किताब में बदल देती है'।(सलाम आखिरी के प्रकाशक)1

भारतवर्ष में सदियों से स्त्री रूपी देवियों की पूजा चली आ रही है। ऐसे में सर्वजनों के मन में एक बड़ा सा सवाल उठतहै कि नारी का स्थान क्या है ? अगर नारी में देवी रूप का अभाव हो तो क्या उसे वेश्या बनायेंगे। अगर हम देखें तो वर्षों से नारी कोई न कोई रूप से पीड़ित और प्रतारित या गुलामी रूप से नजर आते हैं ।हाँलाकि वर्तमान नारी पुरूषों के समान ही मर्यादा प्राप्त करने में सफल हुयी है, फिर

भी समाज में सदियों से व्याप्त वेश्या की समस्या एक बड़ा ही दर्दनायक चिन्ता का विषय बन गया है। इसीलिए इस विषय के ऊपर चर्चा करना अत्यन्त जरूरी हो गया है।

मूल आलेख :

'वेश्या' एक संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ होता है - नाचगान तथा करतब से जीविका चलानेवाली स्त्री। अंग्रेजी में वेश्या को Prostitute कहा जाता है, जो लैटिन शब्द 'प्रो' और 'स्टैट्यूएट' की संधि से बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ होता है 'उघाड़ना' या 'आगे रखना'। अर्थात् जो खुद को उघाड़ते हुए दूसरों के आगे रख देती है,वही वेश्या है। वैदिक भाषा में वेश्या के लिए 'विश' शब्द का प्रयोग हुआ है जिसका अर्थ है - सामान्य जनता और जिसको सामान्य जनता के द्वारा भोग किया जाता है उसे ही वेश्या कहा गया है। युगों से अब तक वेश्या को कई नाम दिया गया हैं, जैसे – देवदासी, सर्वभोग्या, रूपजीवा, नृत्यांगना, गणिका, नगरवधू, तवायफ, वारांगना, विषकन्या, वेश्या, कॉलगर्ल, सेक्सवर्कर आदि। वेश्या को परिभाषा में बाँध पाना मुश्किल है, उसके कई रूप समाज में दिखाई देती है। कोई अपनी मर्जी से अपने फायदे के लिए आते हैं तो किसी को हालात ही जबरदस्ती वेश्या बना देते हैं। जो इस वृत्ति में वंशानुक्रम से है इस दुनिया से बाहर आना चाहकर भी आ नहीं पा रहे हैं। उन सब महिलाओं के दुख, दर्द को प्रत्येक्ष रूप से जाँज - पड़ताल करके उपन्यासकार मधु काँकरिया ने स्त्री- विमर्श खड़ा किया है।

साहित्य में विमर्श आधुनिक युग की देन है।'आदर्श हिन्दी शब्दकोश' के अनुसार 'विमर्श' शब्द का अर्थ होता है – समालोचना, परामर्श, परीक्षा या किसी बात पर अच्छी तरह विचार करना। अत: किसी भी महिला के सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक दृष्टि से उचित मान-सम्मान, मर्यादा, सुरक्षा आदि विभिन्न दिशाओं के ऊपर पुन:अवलोकन कर अच्छी तरह से आलोचना या विचार करना ही स्त्री – विमर्श है। कोलकाता में एशिया का सबसे बड़ा रेड लाइट एरिया परिलक्षित होती है। वेश्यावृत्ति समाज का एक भयंकर समस्या है, जिसे उपन्यासकार मधु काँकरिया ने सामने से साक्षात्कार किया, परखा और संवेदना व्यक्त करके स्त्री-विमर्श खड़ा किया है। निस्संदेह साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब है, जो समाज रूपी शरीर में लगा हुआ दाग, धूल और सुन्दरता को दिखाने में सक्षम होता है। भारत में वेश्यालय की स्थापना या वेश्या कैसे बनाया गया है इसको लेकर भी एक बड़ा सा सवाल हमारे सम्मुख उत्पन्न होता है।अगर हम देखें तो महाकवि कालिदास का मृत्यु भी एक गणिका के हाथों ही हुआ था। इस वृत्ति के आरम्भ को लेकर विद्वानोंमें भी विवाद है। उपन्यासकार के अनुसार वेश्यावृत्ति हमारे संस्कृति के हर एक कालखंड में किसी न किसी रूप से जीवित रहा है। सिर्फ समय साथ उनका नाम, स्थिति और प्रयोग क्षेत्र बदलता रहा। सुन्दरी विषकन्या का व्यवहार शत्रु को मारने के लिए किया जाता था। जैसे- 'चन्द्रगुप्त नाटक' में पर्वतक को मारने के लिए विषकन्या मदनिका का व्यवहार किया गया था।

'सलाम आखिरी' उपन्यास में वेश्या जीवन के हर एक कारणों को वाणी मिली है। प्राय: दरिद्र- पीढ़ित महिला ही अभाव और किसी पुरूष के प्रतारणा के कारण वेश्या वृत्ति में आते हैं– "सोलह-सत्रह वर्ष की मासूम उम्र कुछ समझी....कुछ ना समझती उम्र ....भूखमरी की डर...अजनबी शहर की अजनबी गलियाँ...आसपास कुछ करो-कुछ करो, देह देकर भी अर्जित करो का क्रूर माहौल पूरी जिन्दगी के लिए वेश्या बना दी गई" (28 पृष्ठ)2। यह भी एक कटू सत्य उपन्यासकार ने उल्लेख किया है कि कुछ महिलाएँ या कॉलेज आदि में पढ़ने वाली लड़की अपनी प्रवल यौन इच्छा के कारण पार्ट टाईम काम के रूप में इस वृत्ति को अपनाते हैं और कुछ नौकरी करनेवाली स्त्रीअपनी काम निकालने के लिए अपनी देह के साथ सौदा करती है। इनलोगों के लिए सहानुभूति की आवश्यकता नहीं हैं परन्तु जो वंशानुक्रम से वेश्यावृत्ति में धकेला जा रहा है, उन सबको सभ्यता की प्रकाश में लाने का जरूरत उपन्यास के माध्यम से कराया गया है।

इतिहासकारों के अनुसार वैदिक काल में गणिकावृत्ति अस्तित्व में थी। इसलिए इस देश के हर युग में वेश्याएँ रहीं,बस उनकी नाम बदलती रही। मौर्य काल में गणिकाओं की देखरेख के लिए सरकारी विभाग तक बना दिए गए थे। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में सरकारी गणिकाध्यक्ष को यह आदेश था, कि वह रूपवती, जवान और कला निपुण युवतियों को एक हजार पणम (तत्कालीन सिक्के) के वार्षिक वेतन पर गणिका की हैसियत से नियुक्ति करे। उस समय वेश्याओं को सामाजिक सम्मान और पद प्राप्त थी। नृत्य,वाद्य,गीत, अभिनय जैसी कलाएँ शताब्दियों से गणिकाओं द्वारा ही जीवित रखी गयी थी और खुसामदी के लिए उनका व्यवहार होता था। सत्य तो यह है कि हमारे प्राचीन मनीषियों ने वेश्या उन्मूलन की कल्पना तक नहीं की थी। किन्तु वर्तमान आधुनिक युग में वेश्याओं को सरकारी तौर पर या उचित मान-सम्मान नहीं दिया जाता है, बल्कि घृणा की नजर से देखा जाता है। वे अपने अभावों को परिपूर्ण करने के लिए पैसों के लिए अपने शरीर को बेचते हैं। लेकिन वे भी मान-सम्मान से जीने के लिए ललायित रहते हैं और अपनों से इज्जत के लिए डरते हैं "हर लाइनवाली भरसक चेष्टा

करती है उन आत्मियों से जिन्हें वह प्यार करतीहै, सम्मान करती है , अपने पेशे को कुँवारी कन्या के गर्भ की तरह छिपाए रखना" । (27 पृष्ठ)3

प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान युग तक वेश्याओं की उपस्थिति समाज में पाई गई है, किन्तु प्राचीन काल में जहाँ इन वेश्याओं ने समाज को एक अलग कला एवं संस्कृति से युक्तकिया वहीं आज वह सर्फ वासनापूर्ति का यंत्र मात्र बनकर रह गई है । समय की माँग के अनुसार वेश्याओं ने अपना पुराना प्रतिस्थित रूप त्यागकर केवल अपनी देह को वासना बाजार में विक्रय की वस्तु के रूपें म्उपलब्ध करा दिया है , जो किसी भी देश तथा समाज के लिए अत्यन्त भयावह है । जब एक वेश्या उम्र होने पर अपनी वृत्ति सम्भाल नहीं पाती है, तब वह 13-14 वर्ष की बालिका खरीदकर चकला (वेश्यालय) का मालकिन बन जाती है – "वेश्या जीवन का यह भी एक विद्रूप कि हर वेश्या किसी और को वेश्या बनती देखकर ही अपने वेश्या जीवन के हलाहल को झेल पाती है" (29 पृष्ठा) 4 । समाज में बढ़ती वेश्यालओं को रोकने के लिए सभ्य समाज और सरकार का ध्यान आकृष्ट करना जरूरी होता है । वर्तमान निर्धनता , बेरोजगारी , पारिवारिक विघटन, औद्योगिक क्षेत्रों में स्त्रियों कि तुलना में पूरूषसंख्या में वृद्धि अधिक से अधिक धनार्जन की आकांक्षा आदि ने वेश्या वृत्ति को बर्करार रखा है । भारत एक प्रगतिशील देश है , दिन व दिन शैक्षिक, औद्योगिक विकास की ओर अग्रसर हो रहे हैं । परन्तु बचपन से याने पीढ़ी–दर पीढ़ी जिन स्त्रियों को सभ्यता के दर्शन नहीं मिला है, उन वेश्याओं के लिए कोई प्रगति या प्रकाश की कोई भी सम्भावना नहीं देखा गया है । वेश्या के बच्चों को पढ़ने के लिए अच्छा स्कूल नहीं मिलता है , उन बच्चों का बाप कौन है , यह भी निर्दोष बच्चों को नहीं पता होता है ।

उपन्यास में पिंकी नामक एक वेश्या चाहती है कि उनका बेटा और बेटी पढ़ लिखकर अपनी जिन्देगी बदल ले । एक अच्छी जिन्दगी की कामना हर किसी का होता है , लेकिन हमारे सभ्य और शिक्षित समाज लज्जा और बदनाम के डर से वेश्या के बच्चों को स्कूल में दाखिला नहीं देते हैं और जीविका के लिए अच्छा संस्थापन नहीं मिलता है । परिणास्वरूप नरक रूपी अल्पायु काजीवन भुगतना परता है । यों कहे तो सबसे पहले पहल किसी पुरूष ने ही तो स्त्री को वेश्या का रूप दिया था– "स्त्री किसी की कामुकता का शिकार बन गई तो उसे झूठा मान लिया जाता है । फिर उसके बाद उसके पास सिवाय वेश्यावृत्ति के कोई रास्ता भी नहीं बचता है । महाभारतके वनपर्व में रामोपख्यान की इस उक्ति में कहा गया है – जैसे कुत्ते द्वारा चाटा गया घी का यज्ञ में व्यवहार नहीं होता, उसी प्रकार परहस्तगता नारी भी पति के भोग के लायक नहीं बचती" (135 पृष्ठ) 4 । अगर सच कहा जाए तो ये कैसा न्याय है , स्त्री के ऊपर ही सारी सजा क्यों , विभिन्न स्त्री को भोग करनेवाला पुरूष भी तो वेश्या के समकक्ष ही होता है । लेकिन फिर भी समाज की दृष्टि में पुरूष वेदाग है और हरदिन नये-नये वेश्या की सृष्टि हो रहा है , इसी कारण उपन्यासकार मधु काँकरिया के अनुसार पुरूषों को भी पुरूषवेश्या का नाम देना चाहिए । इसीलिए कहा जाता है आज भी नारी को किसी न किसी रूप में दबाया जा रहा है ।

'सलाम आखिरी' उपन्यास में वेश्या जीवन के हर एक पहलुओं को बड़े ही विस्तार से वर्णन किया गया है । जब किसी चकले में कम उम्र की लड़की को रखा जाता है ,तब उसे गैर कानूनी माना जाता है ।लेकिन कुछ चकले के मालकिन पैसों के लालच में आकर छुकरी (दस से पन्द्रह वर्ष तक की बच्ची को आम भाषा में छुकरी कहा जाता है) रख लेते हैं और उसे एक विशेष पद्धति के द्वारा सम्पूर्ण वेश्या या सम्भोग के लिए प्रौढ़ बना दिया जाता है । यह वेश्या जीवन का एक घिनोना रुप है , जो किसी लाज-शर्म और दया –ममता से रहित होकर केवल पैसे और पेट की भूख के खातिर एक मासुम बच्ची को तुरंत ही शारीरिक तौर से एक औरत में बदल दिया जाता है कानूनी रूप से संविधान यह कहता है कि अट्ठारह वर्ष होने के बाद अपने जीवन निर्वाह के लिए किसी भी प्रोफेशन को आप अपना सकते हैं , अर्थात् वेश्या वृत्ति को भी । इसीलिए वेश्या वर्तमान खुद को 'सेक्स वर्कार' कहने लगा है । पर उन लोगों को एक नागरिक की हैसियत से कभी भी सभी प्रकार की मानवाधिकार एवं मान-सम्मान नहीं दिया जाता है । इसीलिए उपन्यासकार के अनुसार हमारा लक्ष्य होना चाहिए – सेकेंड जेनरेशन वेश्यावृत्ति पर रोक । जो संसार का मायामोह त्यागकर स्वेच्छा से इस वृत्ति पर हैं वे रहें, परंतु बाल वेश्यावृत्ति और जबरदस्त ढकेलने वाली प्रथा खत्म होनी चाहिए ।

वेश्यावृत्ति समाज की एक बड़ा ही भयंकर समस्या है और साथ ही कई समस्याओं का उत्पन्न करनेवाला होता है । प्राय वेश्याओं को कम उम्र में ही एच.आ.वी जैसी भयंकर बिमारियों से ग्रस्त होना पढ़ता है । उपन्यास की एक वेश्या रेशमी चालीस वर्ष की उम्र में ही इस बिमारी का शिकार हो जाता है । रेशमी अपने बिमार का इलाज करने वजाय प्रतिशोध की आग में दुब जाता है, जिन्होंने उसे वेश्या बनाया है उन्हें भी एच.आई.वी से मरवाने का प्रण लेकर रहता है । इस तरह एक वेश्या शारीरिक और मानसिक विकारों की दृष्टि से दिगभ्रष्ट हो जाता है । भारतीय समाज में नारी को नवजीवन का संचार करने वाली मानी जाती है और उसेही वेश्या जैसी घिनौना वृत्ति ठमा देकर नारी की गरीमामयी जीवन पर कलंक लगाया जाता है ।

निष्कर्ष :

'सलाम आखिरी' उपन्यास के माध्यम से वेश्याओं के हर एक पहलुओं को वणी मिला है। वेश्या समाज के नरक रूपी जीवन को मुक्ति दिलाना अति आवश्यक है। अगर समाज में वेश्या को उचित मर्यादा, मान-सम्मान नहीं दे सकता है ,तो वेश्या का जन्म देना भी समाज को हक नहीं है। निश्चित रूप से वेश्याएँ भी समाज के किसी पुरूष के प्रयोजनों को ही पूरा कर रहा है और यौन सम्बन्ध की जरूरत को पूरा करने के लिए विवाह जैसे बंधन को समाज ने बाँध दिया है । ऐसे में इस परिधि से बाहर होकर अनैतिक सम्बन्ध स्थापन करना निश्चय ही शोभा नहीं देते हैं। इसीलिए उपन्यासकार मधु काँकरिया ने स्त्री सुरक्षा और मान-सम्मान पर विचार व्यक्त करते हुए वेश्या उन्मूलन पर जोर दिया है।

पुरूष के बिना नारी अधूरा है और नारी के बिना पुरूष। दोनों ही एक दूसरे का पूरक है। जब आधा हिस्सा याने नारी असुरक्षित रहेगी तब समाज की उन्नति कैसे होगी, इन तमाम विषयों पर उपन्यासकार ने पाठकों का ध्यान आकर्षण करने के लिए कोशिश किया है। निस्संदेह पुरूषों ने ही सर्वप्रथम नारि को वेश्या, गणिका, देवदासी, नगरवधू आदि रूप दिया था और पुरूष प्रधान समाज ने ही नारी को उचित स्थान या आगे बढ़ने का मौका भी दिया है। वेश्यावृत्ति में नियोजित नारियों का उद्धार करना भी पुरूष प्रधान समाज का ही कर्तव्य बनता है। महात्मा गांधी ने कहा है- 'वेश्यावृत्ति मानव समाज के लिए कलंक है इसके बारे में सोचने पर मुझे शर्म आती है। अत: वेश्या वृत्ति को जड़ से मिटाने का आवश्यक है और उन महिलाओं को शिक्षा देकर संस्थापन देना चाहिए, जीवन-यापन का विकल्प प्रदान करना चाहिए।

ग्रंथ सूची-

1.मधु काँकरिया.सलाम आखिरी. राजकमल प्रकाशन.नयी दिल्ली.2002. अनुकथन, पृष्ठ फ्लैप से।
2.वही 28 पृष्ठ
3.वही 27 पृष्ठ
4.वही 135 पृष्ठ